साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 07
August 2015

ताकि बचा रहे केवल रोशनी

हरीश कुमार

बहुत हो गया
रोशनी करना
दीप जलाना
ताकि भाग जाए
अँधेरा
पर क्या नहीं जानते
दीप को बुझते
छा जाती हैं
वही स्याह अँधेरा
इसीलिए
आज यारों
अँधेरे को
चलो जलाते है
ताकि बचा रहे
केवल रोशनी
ताकि न रहे डर
कि बिझाते ही दीपक को
छा जायेगा अँधेरा!